Akshardhara Research Journal

March-April 2025

VOL -01 ISSUE-V

Akshara Publication
Plot. 42 Akshara Publication Gokuldham Residency
Prerna Nagar Wanjola Road Bhusawal Dist.Jalgaon [M. S.] India 425201

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

-: Chief Editor:-

Dr Priyanka J. Mahajan

Co-1110/6 Mamaji Talkies area Juna Satara Bhusawal,
Dist. Jalgaom (M.S) India Pincode 425201
Website: https://admrj.com
E-mail : admrj0404@gmail.com

-: Executive Editor & Publisher :-

Dr. Girish S. Koli

42 Akshara Publication Gokuldham Prerananagar Wanjola Road Near Star Lone Bhusawal Dist. Jalgaon
[M. S.] India 425201
Mobile No: 9421682612

Member Of Editorial Board

DR. E.G. WAJIRA GUNASENA
Designation : Senior Lecturer (I) In Hindi
Address : Department of Languages, Cultural Studies and Performing Arts University of Sri Jayawardenepura, Nugegoda, 10250, Sri Lanka
Mobile : 0094 112758315
Email Id : wajiragunasena@sjp.ac.lk

DR. VIVEK MANI TRIPATHI
Designation : Assistant Professor
Address : Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China.
Mobile : 86-18666279640
Email Id : 2294414833@qq.com

Dr. Girish Kumar Painoli
Designation : Professor
Address : School of Commerce and Management, Aurora Deemed to be University, Hyderabad India Pin Code:500098
Mobile : 07674938785
Email Id : girishkumar@aurora.edu.in

Dr.VIVEK ARUN JOSHI
Designation: Assistan Professor
Address: TES's Institute of Management and Career Development, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425201
Mobile: +91 9881716287
Email Id : admin@ssgbhindimv.com

ADRJ Disclaimer :

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of ADRJ editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

04

'संघर्ष की महागाथा 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में मानवीय संवेदना

डॉ. मंगल मिलिंद कांबळे
विद्या प्रतिष्ठान का, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय विद्यानगरी, बारामती जिला पुणे (महाराष्ट्र)

सार- दलित आत्मकथाओं में चेतना का संचार डॉ.अंबेडकर एवं मा.फुले की विचारधारा की देन है। जिसमें हजारों सालों के देश, भोगे हुए यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति का चित्रण हुआ है। दलित साहित्य मानवीय संवेदनाओं का सशक्त माध्यम है। हर दलित रचनाकार अपनी लेखनी के माध्यम से समाज तक पहुँचता है। आत्मकथाकार अपने विगत जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को सच्चाई और ईमानदारी के साथ तटस्थ होकर अभिव्यक्त करता है। दलित साहित्य अपनी मानवीय अस्मिता को दमखम के बगैर डरे अभिव्यक्त कर रहा है। दलित साहित्य मानवीय संवेदना का आख्यान है। इसलिए आज के समय का यह सबसे अच्छा साहित्य कहा जाता है। एक आत्मकथाकार सिर्फ अपने दुख-दर्द, समस्या, कठिनाई नहीं सांझा करता बल्कि वह जिस परिवेश से जुड़ा है उसका भी अंकित करता है। 'शिकंजे का दर्द 'इस आत्मकथा को पढ़कर एक कराह या आह निकलती है, जो समस्त सी वर्ग का अनेक सदियोंका दुख दर्द है। इस आह से हम रोम-रोम द्रवित होते हैं। हमें अभी इंतजार है समाज में रहनेवाले लोगों में मानवीय संवेदना जाग उठे तथा मानसिकता में परिवर्तन होने की। इस समय कात्यायनी का यह संदर्भ अत्यंत समीचीन लगता है,-

"धारा के विरुद्ध तैरते उन तमाम लोगों को
जिन्होंने इस अंधीरे दौर में भी
न सपने देखने की आदत छोडी है
और न लडने की। (1)

प्रस्तावना

साहित्य मानव मन को प्रतिबिंबित करनेवाला प्रमुख एवं सक्षम माध्यम है। साहित्य के द्वार ही मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति होती है। अभिव्यक्ति के जरिए ही मनुष्य समाज में अपनी पहचान बनाता है। समाज ही तो मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में अहम भूमिका निभाता है। समाज की विविधता के कारण ही साहित्य में विविधता के दर्शन होते हैं। साहित्य की विविध विधाओं में 'आत्मकथा' विधा अपना विशेष वजूद प्रस्थापित कर चुकी है। सुशीला टाकभौरे हिंदी के दलित साहित्य की एक महत्वपूर्ण लेखिका है। वह आंबेडकरी आंदोलन का एक संवेदनशील एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर मानी जाती है। उनकी समस्त रचनाएँ, वैचारिक लेखन हमेशा आंबेडकरी संवेदनाओं का साक्षात्कार करता है। इस संवेदना के कारण टाकभौरे जी का साहित्य परिवर्तनशील विचारों का द्योतक है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को जिंदा रखने की अपील की है। दलित रचनाकार अपनी कृतियों के माध्यम से ऐसे समाज को पाठकों के सामने रखता है जो सदियों से इस समाज से अपरिचित था।

"शिकंजे का दर्द' यह आत्मकथा आज के समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत है। एक स्त्री द्वारा आत्मकथा लिखा जाना बहुत बड़ी बात है। लेकिन एक सच्चा लेखक इन सारी बातों से परे होकर अपने जीवन की हर परत खोलने का ढाढ़स करता है, ताकि अपनी जिंदगी को वह दाँव पर तो लगाता है लेकिन अपने समाज का प्रतिनिधित्व भी डटकर करता है। दालित साहित्य की जमिन ही आंबेडकरी विचारों की है। दलित रचनाकार हमेशा मानवीय संवेदना की माँग करता है, ताकि वह उन विचारों का संवाहक है। स्वतंत्रता, समता, और 'भाईचारा यह मानवता के प्रमुख तत्व है। आज इक्कीसवीं सदी के साहित्य के सामने अनेक चुनौतियों दिखाई देती है। कुछ मानवनिर्मित तो कुछ प्राकृतिक। मनुष्य अपनी पहचान वैश्वीकरण की प्रक्रिया में खोता जा रहा है। उसकी बुध्दी का विकास तो तीव्र गति से हो रहा है, परंतु हमारी संवेदनाएँ सिकुड़ती जा रही है। मनुष्य की संवेदना को जिंदा रखने का काम कला एवं साहित्य कर रहा है। संवेदना को चित्रित करने में दलित साहित्य हमेशा अग्रणी है। दलित साहित्य की नींव ही आंबेडकरवाद है, जो हमेशा समता, स्वतंत्रता, बंधुता, करुणा तथा शील का हिमायती है। दलित कवि, लेखक, रचनाकार, अधिनायकवाद सामंतवाद, ब्राह्मणवाद, को मानव विरोधी मानता है क्योंकि मानवतावाद ही आंबेडकरी विचारों का केंद्रबिंदू है। दलित साहित्य की उपादेयता के कारण रचनाकारों को विश्वास है कि, " अंधियारा कितना ही सघन हो, रोशन के रास्ते एकदम गुम नहीं हुए हैं।" (1)

आंबेडकरवाद मुलतः मानवतावादी अवधारणापर आ आधारित है।इसलिए उसकी सीमाओं के दायरे में पूरी मानवता समा जाती है। दलित साहित्यकारों ने अपनी संवेदनाओं और अनुभूतियों को कहानियों, उपन्यासों, कविताओं, नाटकों तथा

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

आत्मकथाओं जैसी विधाओं के माध्यम से बड़ी ही सजीवता और जीवंतता से उकेरा है ताकि समवेदना तभी जागृत होती है जब हमारे अंदर वेदना हो। दलित साहित्य की बेचैनी, वेदना, विद्रोह, टकराहट सोए हुए दलितों को जगाने का काम करती है, और गैर दलितों को भी मानवीय होने की प्रेरणा देती है।' शिकंजे का दर्द' यह सिर्फ आत्मकथा नहीं तो वह दलित तथा स्त्री मुक्ति के संघर्ष का यथार्थ दस्तावेज है। समाज में निचले पायदान पर रहा दलित समाज वर्णव्यवस्था के कारण अपनी बात साहित्य में रखने के लिए देरी से अवसर प्राप्त करता है मतलब वर्णव्यवस्था दूर ही रखा था लेकिन स्त्रियों को तो यह अधिकार और देरी से प्राप्त होता है। इसमें टाकभौरे जी का यह दर्दभरा दस्तावेज समस्त स्त्रियों के जीवन की गाथा बन जाता है। सुप्रसिद्ध लेखक राजेंद्र यादव 'कहते हैं-'एक 'सी' की आत्मकथा समाज और परिवार की उन भीतरी सच्चाइयों से साक्षात्कार है, जिनकी चुभन जूते की कील की तरह सिर्फ पहननेवाला ही जानता है।" (2) सच है स्त्री मनुवादी मनोवृत्ति के पुरुषीय समाज के शिकंजे में कई वर्षों से फॅसी है, अंदर से मुक्ति के लिए छटपटाती नारी अपने नारी जीवन को कोसते हुए विवश दिखायी देती है।

समाज में आधी आबादी का प्रसिद्ध निहितार्थ है स्त्री । स्त्री शक्ति का परिवार में बहुत बड़ा योगदान होता है मगर उसे अक्सर नगण्य माना गया है।' शिकंजे का दर्द 'आत्मकथा में अभावग्रस्त जीवन के तमाम प्रसंग बिखरे हुए दिखाई देते है। छुआछूत, जातिभेद यह पीड़ा जीवन संघर्ष की कहानी ही बनी है। सवर्णों की दूषित मानसिकता तथा उस व्यवस्था को तोड़ने का काम इस आत्मकथा के जरिए लेखिका करती है। यह हौसला उन्हें आंबेडकरी विचारों से प्राप्त होता है। यह कथन कितना सार्थक है-"जो कौम जितनी जल्दी आंबेडकरवादी दर्शन समझेगी उतना जल्दी अपना विकास कर जाएगी।" (3) आंबेडकरवाद अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहने की ऊर्जा भरता है। साथ ही साथ संघर्ष करके उचित, अपेक्षित लक्ष्य, उद्देश्यों की ओर बढ़ने का संदेश देता है।" शिकंजे का दर्द 'इस आत्मकथा में लेखिका के दाम्पत्य जीवन का एक हिस्सा जितना सार्थक दिखता है, उतना दूसरा अवरोधक लगता है। समर्थक में नौकरी लगाना, पति सुंदरलाल टाकभौरे द्वारा भाषण लिखकर देना, आगे की पढ़ाई पूरी करना, आदि। तो दूसरा पक्ष इससे अधिक कठिण है। इस पीड़ा को भारत की तमाम स्त्रिया भोग रही है। सुशीला जी से बीस वर्ष की आयु बड़ी होने से उनका पति के सामने कोई अस्तित्व ही न के बराबर है। उनकी इच्छा के अनुसार पति के प्रेम से वह कोसों दूर रही। अपने ही घर में वह शोषण की शिकार होती रही। जैसे माँ बहन द्वारा बार बार डॉटना, आयक्यु टेस्ट की बात करना, पतिद्वारा मारना, या पैरों पर सिर रखकर माफी माँगना, तब बात मानना, खाना खाते समय भरी थाली फेंकना, पत्रों के जवाब खुद लिखना आदि । पति दुवारा छली सुशीला जी इसी मानसिकता के प्रति विद्रोह करती है। इस संदर्भ में एक प्रसंग-उस दिन मैं चाय के साथ चप्पल देखकर अवाक रह गई कि मैं इनके लिए चाय रख रही हूँ और वे मेरे लिए चप्पल रख रहे है। -चप्पल दिखाते हुए वे फिर ऊँची आवाज में बोले "हॉ. अब बोल, तुझे क्या कहना है? " (4)

इस आत्मकथा में जीवन की वैचैनिया है सच्चाई है और स्मृतियों भी है। एक ओर लेखिका जातिवाद के शिकंजे को तोड़ना चाहती है तो दूसरी ओर अपनी अस्मिता अधिकार के लिए डटी रहती है। पितृसतात्मक शिकंजा तोड़कर लेखिका सी आस्मिता, स्वाभिमान को प्रस्थापित करना चाहती है। नारी संवेदनाओं की मुरत होती है। साथ ही जीवन की पारखी भी है। लेकिन पितृसता का एकमात्र लक्ष्य है स्त्रियों को परंपरा एवं परिवारिक मूल्यों के नाम पर शोषण के पंजे में जकड़ना। लेखिका स्त्री तथा दलित होने के संत्रास और पीड़ा को उघाइती है। रजनी तिलक कहती है-" एक सताई जाती है सी होने के कारण, दूसरी सताई जाती है सीऔर दलित होने पर, एक तड़पती है सम्मान के लिए, दूसरी तिरस्कृत है भूख और अपमान से" (5) सचमुच स्त्री चहेती है भावभावना, संवेदना, आत्मसम्मान मानवता, प्यार, अपनापन आदि की लेकिन हमारे शास्त्रोंऔर पुराणों में ऐसे हजारों संदर्भ पड़े है जिनमें स्त्री को एक भोगवस्तु या संपति की तरह देखा गया है।

सचमुच स्त्री मुक्ति की राह बेहद कठिण तभा घुमावदार है। इसलिए उसकी स्वतंत्रता की लड़ाई दुहरी तीहरी हो जाती है। सुशीला टाकभौरे जी समाज की तथा मनुवादी पुरुषों की आंखे खोलने के लिए ऐसे दर्दभरे अनुभव जो स्वयं भोगे है, उन्हें साहित्य पटलपर रेखांकित करती है । माँग है मानवीय संवेदना की। यह एक ऐसा सार्वदेशिक परंतु व्यक्तिनिष्ठ मनोभाव है जिसका उद्देश्य, केवल मनुष्य समाज का ही नहीं अपितु समस्त जीवों का हित और जिसकी मूल भावना है "वसुधैव कुटुंबकम "की व्यवहारिक जीवंतता । 'शिकंजे का दर्द यह आत्मकथा दलित नारी के शोषण की महागाथा है। मनुवादी व्यवस्था ने बनाए शिकंजे को टाकभौरे जी हिम्मत से तोड़ती है। उससे समस्त स्त्रीवर्ग में हिंमत तथा स्वाभिमान की लहर पैदा होती है और वह अपना वजूद प्रस्थापित करने में कामयाब होती है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

निष्कर्षः

'शिकंजे का दर्द" यह आत्मकथा न किसी लेखिका या व्यक्ति की है बल्कि संपुर्ण दलित समाज का प्रतिनिधित्व करनेवाली संघर्ष की महागाथा है। दलित स्त्री को अपनी पहचान बनाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा है। लेखिका आत्मकथा के जरिए समाज में अपना स्थान अमिट करती है। दलित स्त्री चौतरफा शोषण की शिकार है, अन्याय अत्याचार उसके सामने खड़े हैं लेकिन उनकी बेहतर जिंदगी के लिए उन्हें इस घिनौनी वृत्ति का पर्दाफाश करना है, लढ़ना है तथा सामाजिक मुक्ति का एजेंडा बड़ी हिम्मत से दिखाना है।

संदर्भ

1) सात भाईयों के बीच चम्पा.. कविता संग्रह. कात्यायनी पृ- 11
2) 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित मानवीय संवेदना सम्पादक प्रा.डा. प्रतिज्ञा पालकी, प्रा.डा. अनुप दळवी पृ.52
3) शिकंजे का दर्द दलित एवं नारी मुक्ती का यथार्थ दस्तावेज-सम्पादक- डा. देवेंद्र चौबे, डा. विष्णु सरवदे पृ. 127
4) 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित मानवीय संवेदना सम्पादक, प्रा.डा.प्रतिजा पातकी, .डा. अनुप दळवी पृ.38
5) डा. बाबासाहब आम्बेडकरः विचार धारा और हिंदी कथेत्तर साहित्य सम्पादक. प्रा. डा. भानुदास आगेडकर, प्रा.डा. संतोष कोळेकर पृ.106
6) समकालीन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना सम्पादक, डा. दयानंद सालुंके पृ.309

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved